अग्निवीरोंको सौगात

केन्द्र सरकारने अग्निपथ योजना २०२२ के तहत भर्ती अग्निवीरोंको दीपावलीके पहले बड़ी सौगात दी है। सरकारने अग्निपथ योजनामें आवश्यक परिवर्तन करते हुए अग्निवीरोंकी सेवा जहां दो वर्षोंके लिए बढ़ा दी है वहीं दूसरी ओर उनके लिए सेनामें स्थायी नौकरीका मार्ग भी प्रशस्त कर दिया गया है। बुधवारको प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदीकी अध्यक्षतामें हुई केन्द्रीय मंत्रिमण्डलकी बैठकमें यह महत्वपूर्ण निर्णय किया गया है, जो स्वागतयोग्य है। मंत्रिमण्डलकी बैठकके बाद चीफ आफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) जनरल राजा सुब्रमणिने कहा है कि यह बदलाव सेनाओंमें शामिल हो चुके करीब तीन लाख अग्निवीरोंके लिए है। जो अग्निवीर अब भरती होने वाले हैं, उनके लिए यह व्यवस्था नहीं है। अब यह भी प्रश्न उठता है कि अग्निपथ योजनामें परिवर्तनकी आवश्यकता क्यों पड़ गयी? यह योजना १४ जून २०२२ को प्रारम्भ की गयी थी। इसके पीछे सेनाकी भर्ती व्यवस्थामें बदलाव, सैन्य बलोंकी औसत आयु कम करना, आधुनिक तकनीकके अनुरूप युवा सैनिकोंकी संख्या बढ़ाना और रक्षा बजटमें वेतन तथा पेंशनके बोझको सन्तुलित करना जैसे प्रमुख उद्देश्य थे। लेकिन योजनाकी शुरुआतमें ही कुछ गम्भीर प्रश्न सामने आ गये। पहले बैचके अग्निवीरोंकी चार वर्षकी सेवा समाप्त होनेका समय निकट आनेके साथ यह प्रश्न और महत्व पूर्ण हो गया। सरकारका नया फैसला इसी पृष्ठभूमिमें आया है। इस फैसलेके सबसे महत्वपूर्ण पहलू सेनामें प्रशिक्षित मानव संसाधनको अधिक समयतक बनाये रखना है। अनुभवी सैनिकोंकी उपलब्धता, प्रशिक्षणपर निवेशका लाभ, सैन्य क्षमतामें निरन्तरता, सैनिकोंका मनोबल जैसे विषय महत्वपूर्ण हैं। नये नियमोंसे अग्निवीरोंको काफी राहत मिलेगी और भविष्यको लेकर बनी उनकी अनिश्चितता भी कम होगी। जो अग्निवीर नियमित सैन्य सेवामें शामिल नहीं हो पाते, उनके लिए अन्य सरकारी सेवाओंमें अवसर उपलब्ध करानेकी व्यवस्था भी महत्वपूर्ण है। सरकारकी नयी व्यवस्थाके बावजूद कुछ प्रश्नोंका समाधान भी आवश्यक होगा। इनमें स्थायी नियुक्तिकी वास्तविक गारण्टी, वरिष्ठताका प्रश्न, आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा, सेनाकी संघटनात्मक आवश्यकताएं योजनाकी निरन्तर समीक्षा जैसे महत्वपूर्ण विचारणीय मुद्दे हैं। अग्निवीरोंके लिए दो वर्षकी अतिरिक्त सेवा और उसके बाद नियमित सैनिक बननेका अवसर उपलब्ध करानेका फैसला भारतीय सैन्य भर्ती व्यवस्थामें एक महत्वपूर्ण नीतिगत परिवर्तन है। इससे उन युवाओंको राहत मिलेगी जो सेनामें स्थायी कैरियर बनानेका सपना लेकर अग्निपथ योजनासे जुड़े थे। इसका दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि सेनाको प्रशिक्षित और अनुभवी जवानोंकी सेवाएं अधिक समयतक मिल सकेगी।

अधिभारका अधिकार

सर्वोच्च न्यायालयने अपने एक अहम फैसलेमें बुधवारको राज्योंको बिक्री कर पर अतिरिक्त बिक्री कर या अधिभार लगानेके अधिकारको सही ठहराया है। कोर्टने साफ किया कि राज्योंके इस वित्तीय अधिकारको चुनौती देने वाला एक लम्बे समयसे लम्बित कानूनी मामला, वस्तु एवं सेवाकर (जीएसटी) लागू होनेके बाद अब केवल एक सैद्धान्तिक मुद्दा बन चुका है। मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकान्तकी अध्यक्षता वाली सात जजोंकी संविधान पीठने सर्वसम्मतिसे कहा कि १९७४ की संविधान पीठका वह फैसला अब भी प्रभावी है, जिसमें राज्योंको अतिरिक्त बिक्री कर या अधिभार लगानेका अधिकार दिया गया था। यह अधिभार मौजूदा बिक्री कर या अधिभारके रूपमें तय किया जाता है। कोर्टने स्पष्ट किया कि पांच जजोंकी पीठका 'एस कोदार' बनाम केरल राज्य (१९७४) का फैसला अब भी पूरी तरह प्रभावी है। इस फैसलेमें अतिरिक्त कर या अधिभार, वास्तवमें बिक्री करकी दरमें वृद्धि ही है, न कि डीलरोंकी आयपर कर है। पीठने माना कि सन्दर्भित सवालका अब कोई व्यावहारिक महत्व नहीं रह गया है। क्योंकि इस सवालका अब कोई औचित्य नहीं है, इसलिए सात जजोंकी पीठका इस सवालपर दोबारा निर्णय किये जानेकी आवश्यकता नहीं। इस मामलेमें पीठका यह कहना भी महत्वपूर्ण है कि चुनौती दिये गये वैधानिक प्रावधानोंको तबसे बदला जा चुका है या उनमें संशोधन किया जा चुका है और जीएसटी कानून लागू हो चुका है। सीजेआई सूर्यकान्तने पांच अन्य जजोंकी ओरसे फैसला लिखा इसलिए सात जजकी पीठका इस सवालपर निर्णय किये जानेकी जरूरत नहीं रह गयी। न्यायमूर्ति के.वी. विश्वनाथनने अलगसे सहमति वाला फैसला लिखा। इस तरह सर्वसम्मतिसे लिया गया सात जजोंका फैसला याचिकाकर्ताके लिए बड़ा सबक है।

लोक संवाद

मधुमेहसे बचावके उपाय

महोदय,-शरीरमें शुगर यानी ग्लूकोजका स्तर कम होना एक ऐसी स्थिति है जिसे मेडिकल भाषामें हाइपोग्लाइसीमिया कहा जाता है। हमारे दिमाग और शरीरको ठीकसे काम करनेके लिए ग्लूकोजकी लगातार जरूरत होती है। जब इसका स्तर नीचे चला जाता है तो शरीर तुरंत खतरेके संकेत भेजने लगता है। आम तौरपर यह समस्या मधुमेहके मरीजोंमें अधिक देखी जाती है, लेकिन कई बार लम्बे समयतक भूखे रहने, अत्यधिक व्यायाम, कुछ दवाओंके सेवन या अन्य स्वास्थ्य कारणोंसे गैर-डायबिटिक लोगोंमें भी हो सकती है। शुरुआतमें हल्की कमजोरी, पसीना आना या चक्कर जैसे लक्षण दिखाई दे सकते हैं, लेकिन यदि समयपर ध्यान न दिया जाय तो यह स्थिति गम्भीर भी हो सकती है। इसलिए यह जानना जरूरी है कि शुगर कम होनेपर शरीरमें क्या-क्या परेशानियां हो सकती हैं, उनके शुरुआती संकेत क्या हैं और ऐसी स्थितिमें तुरन्त क्या करना चाहिए। बारिशके मौसमके लिये जानें खास सात डाइट प्लान और इम्युनिटी बढ़ाने वाले घरेलू उपाय। जब शुगर कम होना शुरु होती है, जानें शुरुआती लक्षण, जैसे ही ब्लड शुगरका लेवल गिरता है, शरीरमें एड्रेनालाईन हार्मोन बढ़ने लगता है, जिससे ये शुरुआती परेशानियां होती हैं। अचानक तेज भूख लगना, शरीर ऊर्जाकी कमीको पूरा करनेके लिए तुरन्त खानेके संकेत देता है। चक्कर आना या कमजोरी, सिर हल्का महसूस होने लगता है और पैर डगमगाने लगते हैं। चिड़चिड़ापन या मूड बदलना, अचानक बिना बातके गुस्सा आना, रोनेका मन करना या घबराहट होना। हाथ-पैरोंमें कंपन या घबराहट, बिना किसी कारणके शरीरमें कंपकंपी महसूस होने लगती है। अत्यधिक पसीना आना और ठंड लगना, बिना गर्मीके भी अचानक विशेषकर गर्दनके पीछे ठंडा पसीना आने लगता है। दिल की धड़कन तेज होना, ऐसा महसूस होना कि दिल बहुत तेजीसे धड़क रहा है। जब शुगर बहुत ज्यादा गिर जाय और दिमागको पर्याप्त ग्लूकोज न मिले तो स्थिति गंभीर हो सकती है। आंखोंके सामने धुंधलापन आना, साफ दिखाई न देना या एक की जगह दो चीजें दिखना। भ्रमकी स्थिति, बात समझनेमें दिक्कत होना या लड़खड़ाती आवाजमें बोलना या सहीसे बोल न पाना। नींद न खुलना या सुस्ती, बहुत ज्यादा सुस्ती छा जाना और सोनेकी इच्छा होना। दौरे पड़ना या बेहोशी, यह सबसे खतरनाक स्थिति है, जहां व्यक्ति अचानक अचेत हो सकता है। आपातकालीन स्थितिमें क्या करें। यदि आपको या आपके आस-पास किसीको शुगर कम होनेके लक्षण दिखें, तो १५ ग्राम तुरन्त पचने वाला कार्बोहाइड्रेट लें, जैसे ही लक्षण दिखें, मरीजको तीन-चार चम्मच चीनी/ग्लूकोज पाउडर, १/२ कप फ्रूट जूस, या चार-पांच टॉफी चूसनेके लिए दें। ध्यान रखें, चॉकलेट या बिस्कुट न दें, क्योंकि इनमें मौजूद फैट शुगरको जल्दी बढ़ने नहीं देता। कुछ भी मीठा खिलानेके बाद मरीजको शांत बैठने दें या आराम करने दें और १५ मिनटतक इंतजार करें ताकि शुगर शरीरमें एब्जॉर्ब हो सके। १५ मिनट बाद ग्लूकोमीटरसे शुगर लेवल दोबारा मापें। यदि लेवल अब भी कम है तो स्टेप एकको दोबारा दोहरायें। जब शुगर लेवल ऊपर आ जाय तो मरीजको एक रोटी या बिस्कुट जैसी ठोस चीज खिलायें, ताकि शुगर लेवल दोबारा नीचे न गिरे। यह शुगर लेवलको स्थिर रखनेमें मदद करेंगा। यदि व्यक्ति बेहोश हो गया हो या कुछ भी निगलनेकी स्थितिमें न हो तो उसके मुंहमें जबरदस्ती पानी, जूस या चीनी बिल्कुल न डालें। इससे वह उसकी सांसकी नलीमें फंस सकता है। ऐसी स्थितिमें तुरंत मरीजको नजदीकी अस्पताल ले जायं ताकि उसे ग्लूकोजका इंजेक्शन दिया जा सके। **-राजश्री, वाया ईमेल।**

तत्ववेत्ता श्री सत्येन्द्र कुमार गुप्त

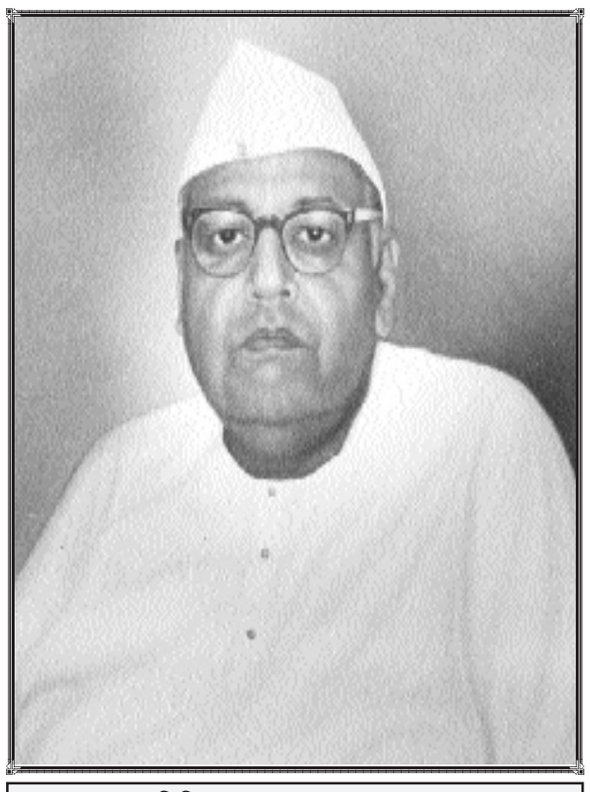
स्वतंत्रताके बाद हिन्दी पत्रकारिता समाजके प्रति अपने मूल धर्मसे विरत होने लगी थी। राजनीतिक, सामाजिक दबावमें समाचार-पत्र धन अर्जित करनेका साधन बन गये थे। पुरानी पीढ़ीके सम्पादकोंने आजादी पूर्व जो भावी स्वरूपपर आशंका प्रकट की थी, वह सच साबित होने लगी थी परन्तु यहींपर महान सम्पादककी विद्वता परिलक्षित होती है। इस कार्यमें श्रद्धेय गुप्त जीने अपने उच्च आदर्शों और संस्कारोंको मद्देनजर रखते हुए गिरावट आने नहीं दिया। हिन्दीके प्रति आपके अप्रतिम प्रेमने 'आज' को गौरव प्रदान किया। परम श्रद्धेय श्री सत्येन्द्र कुमार गुप्त जी द्वारा राष्ट्रके लिए किये गये त्याग और संघर्षके अनेकों उदाहरण हैं, जो राष्ट्रप्रेमकी भावनाके बिना सम्भव ही नहीं है। सत्ताकी मोह-मायासे कोसों दूर आप निरन्तर समाजको दिशा देनेमें लगे रहे। अतः गर्वके साथ कहा जा सकता है कि एक भारतीय होनेके नाते परम श्रद्धेय श्री सत्येन्द्र कुमार गुप्त जी हर कठिन परीक्षामें सफल हुए तथा अनेक मुश्किलोंके बाद मजबूत होकर कुंदनकी भांति चमके। सही मायनेमें आप तत्वद्रष्टा थे। ऐसे महापुरुषकी पुण्यतिथिपर हृदयकी अतल गहराइयोंसे श्रद्धांजलि।

❐ सुमन द्विवेदी

यशस्वी सम्पादक परम श्रद्धेय श्री सत्येन्द्र कुमार गुप्तजीका बहुमुखी व्यक्तित्व था। श्री सत्येन्द्र कुमार जी प्रारम्भसे ही अपने दादा जी राजश्री राष्ट्ररत्न बाबू शिवप्रसाद गुप्त जीके साथ गहन संवेदनासे जुड़े रहे। उनके व्यक्तित्वकी गहरी छाप आपके जीवनमें दिखती रही। प्रेरक व्यक्तियोंका सानिध्य भारतीयताकी नरमीका स्पर्श स्पष्ट रूपसे दिखता है साथ ही निजी अनुभवकी परिवक्वताकी खनक श्रद्धेय सत्येन्द्र जीके समस्त जीवनकालमें देखनेको मिला। समाचार-पत्रके सम्पूर्ण विकासमें भारतीय विश्व दृष्टिसे तादात्मयका बोध कराती है। आजकी तमाम प्रतियां संसदके गलियारोंकी अनुगूंज बनती थी। अपने जीवनकालमें स्वाधीनताके महत्वपूर्ण मानवीय मूल्योंको रेखांकित करती सतत् जागरूक प्रक्रियाको उनकी सम्पादकीय मनोदशाके उद्वेलनको समझा जा सकता है। आपने अभिव्यक्तिके लिए कई विधाओं, कलाओं और भाषाओंका प्रयोग किया। समाचार-पत्रमें कविता, कहानी, उपन्यास, वृतान्त, वैयक्तिक निबन्ध, वैचारिक निबन्ध, आत्मचिन्तन, समीक्षाका समावेश किया, जिससे आपके व्यक्तित्वकी विशालता समाचार-पत्रके साथ एकाकार करने लगी। यही वजह रहा कि समस्त पाठकगण स्वयंको 'आज' के साथ गहरे रिश्तेमें बंधा अनुभव करने लगता था। आपने भाषापर विशेष ध्यान दिया। उसे स्पष्ट और सहज बनानेपर जोर दिया। श्रद्धेय श्री सत्येन्द्र कुमार जीने तार्किकताको महत्व दिया।

आपके तर्क आकाट्य होते। अपनी बात छोटे-छोटे वाक्योंमें आरम्भ करते। कभी-कभी बातपर बल देनेके लिए वाक्योंको अधूरा ही छोड़ देते जिससे लोगोंका ध्यान आकर्षित हो। अपने विषयोंको स्पष्ट करनेके लिए प्रश्न भी उठाते और फिर अगले वाक्योंमें उसका समाधान भी कर देते। उनकी अभिव्यक्तिकी शैली अद्भुत थी। प्रश्नोत्तर शैलीसे आप लोगोंको बांध रहते। आपकी भाषा सहज, सरल और आडम्बरहीन होती तथा शैली प्रभावपूर्ण जोशीली एवं निरन्तरतासे युक्त होती। यही वजह था कि तत्कालीन लोग प्रधान सम्पादक श्री सत्येन्द्र कुमार गुप्त जीके सामने पूर्ण तैयारीके साथ जाते थे। घोर संकटकी स्थितिमें आपने जिस साहस, संकल्प और दूरदृष्टिसे 'आज' को सम्पूर्ण समाचार-पत्र बनाया, इसकी दूसरी मिसाल मिलना कठिन है। आपने तमाम भावनाओंके द्वारा चिन्तनके दृष्टिकोणसे आच्छादित कर समस्त 'आज' परिवारको सकारात्मकतासे भर दिया। समाजके प्रति अपने दायित्वोंको लेकर आप हमेशा ही मुखर रहते थे। आपका कथन प्रासंगिक है कि नियमित चिन्तनसे व्यक्तिको सहज ही विकृतियोंसे मुक्ति मिल सकती है। व्यसन और वासनाओंका मूल मनुष्यके अन्तसमें ही निहित होता है। यह कथन आपका समाजको बदलनेके लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा। धीरे-धीरे समस्याका मूल व्यक्तिकी समझमें भी जाता है और व्यक्तिके दबे हुए मनोभाव जागृत होते हैं। ऐसेमें शक्तियों और सकारात्मक कार्योंका प्राकृत रूपसे विकास होता है। आजके परिवेशमें आपका चिन्तन सर्वथा गहरा है। आपने एक पूरी पीढ़ीको जागृत किया। स्वाध्याय, क्रियाशीलता, निर्माणशीलता, संकल्पना युगधर्मके प्रति सजगता और आत्मविश्वास आपकी बहुमुखी प्रतिभाके प्रतीक थे। आपने समाचार-पत्रके माध्यमसे देशको नवचेतनाका सार्थक सन्देश दिया। एकाग्रतापर आपका विशेष ध्यान होता था। आपका कथन था कि मन इधर-उधर भटकता रहता है, मन इन्द्रियोंका राजा है। वह सदा चंचल, अस्थिर तथा भ्रमणशील रहता है। तृप्तिका भाव शान्त होने नहीं देता। मन चाहता है शुद्ध ज्ञान और आनन्द, जो उसका मूल स्वभाव है जब उसकी यह भूख शान्त हो जाती है तो मनकी चंचलता भी शान्त हो जाती है।

श्रीमद्भगवद्गीताके १८वें अध्यायका आप नियमित पाठ करते थे। आपने अपने जीवनमें भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुनके संवादको आत्मसात किया। भगवान सभी जीवोंके हृदयमें स्थित हैं। अत: कर्मोंके अनुसार वे गति प्रदान करते हैं। यदि हम उनका स्मरण करते हुए अपने सभी कर्म उन्हें समर्पित करते हैं तथा उनका आश्रय लेकर उन्हें अपना लक्ष्य बनाते हैं तो उनके कृपासे सभी प्रकारकी कठिनाइयोंको पार कर लेते हैं। श्रीमद्भगवद्गीताकी इस प्रेरणामयी विचारधाराको आप सदैव अपने हृदयमें धारण करते थे और अपने अधीनस्थको सलाह दिया करते थे कि ईश्वरमें सर्वोपरि विश्वास होना चाहिए। आप सदैव श्रीमद्भगवद्गीता साथ रखते थे। भगवानकी भक्ति ही गहनतम ज्ञान है। यही कारण था कि



जन्मतिथि	पुण्यतिथि
३ अप्रैल, १९१८	६ नवम्बर, १९८४

आपसे भगवद् चर्चाके लिए दूर-दूरसे लोग मिलने आया करते थे। आत्मा ही मनका आनन्द है। सत, रज, तमके आवरणके कारण मन आत्माको देख नहीं पाता। अंततक कण-कणमें ढूंढ़ता रहता है। यही आध्यात्मिक सोच आपको अत्यन्त विराट व्यक्तित्व प्रदान करता है। सही अर्थोंमें आप तत्वदर्शी, आत्मदृष्टा थे। समचेतन भाव आपको अद्वितीय बनाता है।

आजादीके पूर्व लोकमान्य गंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, महामना मदन मोहन मालवीय, महात्मा गांधी, राष्ट्ररत्न बाबू शिवप्रसाद गुप्त एवं सम्पादकाचार्य बाबूराव विष्णु पराडकर जैसे मनीषियोंने स्वतंत्रताके साथ न सिर्फ हिन्दी पत्रकारिताको परिभाषित किया अपितु उसे स्वस्थ स्वरूप भी प्रदान किया। किन्तु देशकी स्वाधीनताके साथ सब कुछ बदलने लगा। आदर्शों और मूल्योंका क्षरण शुरू होने लगा। हालांकि उस समयकी पत्रकारिता सीमित संसाधनोंके बीच अंगड़ाई ले रही थी। आपने हिन्दी पत्रकारितामें जो मजबूत नींव तैयार की, वह कमोबेश आज भी कायम है। आप मानते थे कि पत्रकारिताको प्रतिशीलताका वाहन होना चाहिए और पत्रकारको प्रगतिशील। आप समाचार और विचार अलग-अलग मानते थे। आप हमेशा कहते थे समाचार लिखते समय पत्रकारको अपनी भावना तथा विचारको अलग रख देना चाहिए। यही वजह रहा कि आपने 'आज' के नवीन विचारको सर्वथा उचित स्थान दिया। हालांकि आजादीके लिए लाखों भारतीयोंने जो त्याग और बलिदान दिया उसे समयके प्रवाहमें भुला दिया गया। भ्रष्टाचार, घूसखोरी जैसी कुव्यवस्थाएं समानान्तर व्यवस्थापर होवी होने लगी। गरीबी, अभाव और संवेदनहीनता लोगोंकी साखको संकुचित कर रही थी। आन्तरिक और बाह्य खतरे लगातार बढ़ रहे थे। तिब्बतपर अधिकारके बाद चीनकी कुदृष्टि भारतपर भी थी। ऐसे कठिन समयमें श्रद्धेय सत्येन्द्र कुमार गुप्त जीने 'आज' के प्रधान सम्पादकके गुरुतर दायित्वका निर्वाह किया था। उस समय समाचार-पत्र भी राष्ट्रीय संकटसे अछूते नहीं थे। कागजसे लेकर प्रिण्टिंग सामग्रीसे सम्बन्धित संकट था परन्तु आपने पृष्ठ संख्यामें कटौती नहीं की। आजादीसे पूर्व मिशनपर चल रहा 'आज' आजादीके बाद घाटेमें चल रहा था। 'आज' के सामने विषम परिस्थितियोंके बावजूद आपने निर्भीकताका परिचय देते हुए तूफानोंको चीरते हुए प्रगति-पथपर अग्रसर रहे। अपनी अनवरत साधनाके जरिये आपने जो समृद्धि दी उसके लिए हिन्दी संसार आपका हमेशा ऋणी है और रहेगा। आपने बदली परिस्थितियों और नवयुगकी आवश्यकताओंके अनुरूप 'आज' को नया स्वरूप प्रदान करनेके साथ ही पृष्ठोंका विस्तार भी किया। अति कुशलताके साथ समस्त समाचारोंको पाठकोंतक पहुंचानेके लिए विशेष प्रबन्ध किये। यही वजह था कि 'आज' नित नये सोपान गढ़ने लगा। आपकी मेहनत और लगनने 'आज' को शिखर प्रदान किया। आपने शब्दों और वाक्य-विन्यासपर विशेष ध्यान दिया जिससे समस्त हिन्दीप्रेमी 'आज' को पढ़कर अपना ज्ञान बढ़ाते। यह उत्कृष्टता 'आज' को विशेषता प्रदान करती है। जब भारतीय नवजागरण एवं जनजागरणके अधिकांश लेख अनुवादोंको ही महत्व देने लगे थे और उपनिवेशवादियोंने भी अनुवादोंको महत्व देना शुरू किया तब परम श्रद्धेय सत्येन्द्र कुमार गुप्त जीने अपनी परम्परा एवं स्वत्वको पहचानका माध्यम बनाया तथा हिन्दी विरासतको जन-जनतक पहुंचाया।

स्वतंत्रताके बाद हिन्दी पत्रकारिता समाजके प्रति अपने मूल धर्मसे विरत होने लगी थी। राजनीतिक, सामाजिक दबावमें समाचार-पत्र धन अर्जित करनेका साधन बन गये थे। पुरानी पीढ़ीके सम्पादकोंने आजादी पूर्व जो भावी स्वरूपपर आशंका प्रकट की थी, वह सच साबित होने लगी थी परन्तु यहींपर महान सम्पादककी विद्वता परिलक्षित होती है। इस कार्यमें श्रद्धेय गुप्त जीने अपने उच्च आदर्शों और संस्कारोंको मद्देनजर रखते हुए गिरावट आने नहीं दिया। हिन्दीके प्रति आपके अप्रतिम प्रेमने 'आज' को गौरव प्रदान किया। परम श्रद्धेय श्री सत्येन्द्र कुमार गुप्त जी द्वारा राष्ट्रके लिए किये गये त्याग और संघर्षके अनेकों उदाहरण हैं, जो राष्ट्रप्रेमकी भावनाके बिना सम्भव ही नहीं है। सत्ताकी मोह-मायासे कोसों दूर आप निरन्तर समाजको दिशा देनेमें लगे रहे। अत: गर्वके साथ कहा जा सकता है कि एक भारतीय होनेके नाते परम श्रद्धेय श्री सत्येन्द्र कुमार गुप्त जी हर कठिन परीक्षामें सफल हुए तथा अनेक मुश्किलोंके बाद मजबूत होकर कुंदनकी भांति चमके। सही मायनेमें आप तत्वद्रष्टा थे। ऐसे महापुरुषकी पुण्यतिथिपर हृदयकी अतल गहराइयोंसे श्रद्धांजलि।

ईशावास्योपनिषदसे आनन्दकी प्राप्ति

❐ स्वामी सर्वानन्द

ईशावास्योपनिषद्में त्यागपूर्वक-लोभरहित दिव्य जीवन जीनेकी प्रेरणा मिलती है। उपनिषदोंके ज्ञानका मुख्य उद्देश्य समस्त मानव जातिको सुख-शान्ति एवं आनन्दकी प्राप्ति कराना है। वस्तुत: यदि जीव स्थायी सुख-शान्तिकी प्राप्ति करना चाहता है तो उसे आत्मानुभूति, आत्मोन्नतिके लिए प्रयत्नशील होना ही पड़ेगा। अध्यात्मकी ओर गतिके बिना, शुद्ध-ज्ञान, शुद्ध-कर्म, शुद्ध-उपासनाके बिना त्याग, तपस्या, सेवा, श्रद्धा, समर्पण, चित्तकी शुद्धताके बिना आत्मानन्द असम्भव है। ईशावास्योपनिषद्का पहला मन्त्र ईश्वरकी सर्वव्यापकता, संसारकी नश्वरता, त्याग और समर्पणकी उदात्त भावना तथा लोभ मुक्त जीवन जीनेकी कामनाका समग्रदर्शन हमारे सामने प्रस्तुत करता है। इस मन्त्रका एक अंश भी यदि हम अपने जीवनमें उतारते हैं तो हमारा जीवन पराधीनताओं, न्यूनताओं एवं अपूर्णताओंसे ऊपर उठकर दिव्यताको प्राप्त होता है।

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध: कस्यस्विद्धनम्॥

अर्थात् मन्त्रका प्रथम उपदेश यह है कि ईश्वरको सर्वव्यापक, इस ब्रह्माण्डकी प्रत्येक वस्तु और स्थानमें ओत-प्रोत समझना। स ओत: प्रोतश्च विभु: प्रजासु। वह परमात्मा सभी प्रजाओंमें ताने-बानेके समान ओत-प्रोत है, वह खुदा खुद आया हुआ है, जर्रे-जर्रेमें समाया हुआ है। किसी कविने बहुत सुन्दर कहा है-कणमें जो रमा है, हर दिलमें है समाया, उसकी उपासना ही कर्तव्य है बताया। उस परमात्माकी सत्ता और व्यवस्थाको पत्ता-पत्ता बता रहा है। जो मनुष्य उसको इस प्रकारसे समझता है, स्वीकार करता है, वह पापसे बच जाता है। क्योंकि मनुष्य जो भी तथा जहां भी अनैतिक, अमर्यादित (हिंसा, चोरी, नशा, व्याभिचार आदि) कर्म करता है, तब वहां वह अपनेको अकेला समझ बैठता है और न करने योग्य पाप युक्त कर्मको कर डालता है। जिससे बादमें उसको बहुत पश्चाताप् होता है, दु:ख एवं आत्मग्लानिकी पीड़ा सहनी पड़ती है। यदि वह ईश्वरके प्रति ऐसा विश्वास करे कि ईश्वर मुझे हर क्षण हर पल देख, सुन, जान रहा है और मेरे द्वारा किये गये प्रत्येक कर्मका उसकी न्यायव्यवस्थानुसार फल मिलेगा, किये गये पापका दण्ड अवश्य भोगना पड़ेगा तो वह पापसे बच जाता है।

इस मन्त्रका दूसरा उपदेश इस प्रकार समझना चाहिये कि 'ज' का अर्थ जन्मना और 'गत्' का अर्थ चले जाना अर्थात् यह संसार गतिशील है, गम्यमानायां सृष्टौ जगत् यद् गच्छति तत्। जो सदैव चलता रहता है और बनता बिगड़ता रहता है, इसका बनना बिगड़ना अनादि कालसे चलता आ रहा है और सदा चलता रहेगा। यह संसार परिवर्तनशील है, एक क्षणके लिए भी रुकता नहीं 'संसरतीति संसार:' जो सदा सर-सर सरकता है। अत: इस रहस्यको जान कर धीर-गम्भीर विद्वान्जन सांसारिक विषय भोगोंके प्रति आसक्त नहीं होते हैं। भौतिकताकी अन्धी दौड़में आध्यात्मिकताको नहीं भूलते हैं, अपने दिव्य स्वभाव, सुसंस्कारोंसे समझौता नहीं करते, क्योंकि वे जानते हैं कि परिवर्तन तो शाश्वत है, मिथ्या अहंकार जीवनके दिव्य उद्देश्योंको नष्ट करके असंख्य कष्ट देने वाला है। इसलिए हे मनुष्य इस अपार संसार सागरमें मत फंस। इस मन्त्रका तीसरा उपदेश यह है कि तेन त्यक्तेन भुन्जीथा:। अर्थात् हे मनुष्यों! संसारकी वस्तुओंका अनासक्त भावसे त्यागपूर्वक उपभोग करो। लोभ, मोह मत करो, संसारके भोगोंको भोगो जो नितान्त आवश्यक हैं, क्योंकि आसक्तिपूर्वक, अमर्यादित, असंयमित भोग अनेक रोगोंको जन्म देता है, महाराज भर्तृहरिने बहुत ही अच्छा कहा है. 'भोगे रोगभयम्' अन्य किसी स्थान में. 'यत्र भोगा: तत्र रोगा:' कहा गया है, इसलिए 'भोगी नहीं, रोगी नहीं, योगी बनो अपने तथा संसारके लिए उपयोगी एवं सहयोगी बनो' भोग ऐसे भोगो जो हमारे शरीर, मन, आत्माके बलको बढ़ानेके लिए, समाजके लिए राष्ट्रके लिए कल्याणकारी हैं, जिससे सदा उत्कर्ष, उत्थानकी प्राप्ति हो। आजकल समस्त विश्वमें हाहाकार-अशान्ति है। 'त्राहि मां त्राहि माम्' मुझे बचाओ, मेरी रक्षा करोकी करुण-क्रन्दन आवाज सुनाई दे रही है। जिसके उत्तरदायी हम स्वयं ही हैं।

माता-पिता जब सन्तानको कर्तव्य पालनकी दृष्टिसे पालते-पोषते हैं और गुरुजन शिक्षा देते हैं, बड़ा होनेपर वह सन्तान सेवा सत्कार करे या न करे कोई दु:ख नहीं होगा, परन्तु जब मोहकी दृष्टिसे पालन-पोषण होगा तब यदि वह वृद्ध-अवस्थामें सेवा सत्कार न करे तो अत्यन्त दु:ख होगा। इसलिए कर्तव्य भावनासे ईश्वरको समर्पित किये गये कर्मोंके फलका ही उपभोग करना है। अविवेकपूर्ण अन्याय एवं अज्ञानतापूर्ण कर्मोंका परित्याग करें। वैसे भी व्यवहारिक रूपमें जिन भी संसाधनोंका उपयोग हम करते हैं उनको अपने साथ-साथ लेकर नहीं फिरते। अत: संग्रह मत करें संग्रहका कहीं अन्त नहीं है। एक इच्छा होती है दूसरी आवश्यकता होती है आवश्यकताओंकी पूर्ति तो येन-केन-प्रकारेण हो ही जाती है परन्तु इच्छाओंकी पूर्ति कभी भी नहीं हो सकती, क्योंकि मनुष्यकी इच्छाओंका कोई अन्त नहीं है, इच्छाही दु:खका कारण है।

मन्त्रका चौथा उपदेश और विशेष है- मा गृध: कस्य स्विद्धनम् किसीके भी धनकी इच्छा अथवा लालच मत करो दूसरे शब्दोंमें कहें तो दूसरेके हिस्सेका जो धन है उसका लोभ मत करो, क्योंकि लोभ अनेक पापोंका मूल है गीतामें इसे नरकका द्वार कहा गया है।

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मन:। काम: क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्॥

गीतामें कहा गया है कि काम, क्रोध तथा लोभ ये तीनों नरकके द्वार हैं- अधोगतिकी ओर ले जाने वाले हैं और साथ ही आत्माका नाश करने वाले-गिराने वाले हैं, इसलिए इन तीनोंको छोड़ देना चाहिए। इस संसारमें लोभ लालच करना उचित नहीं है, इससे हमारी मति, गति, प्रकृति तथा संस्कृतिकी क्षति होती है। काम, क्रोध तथा लोभ ये तीनों ही मानवके महाविनाशके कारण बनते हैं-

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भव:। महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्॥

विषयोंका स्वाद और सौन्दर्य हमें अपनी ओर आकृष्ट करके हमारे निधन-मृत्युका कारण बन जाते हैं। हम पूरे जीवन धनके लालचमें छल कपट, झूठ, चोरी, बेईमानी, द्वेष, दंगा, भ्रष्टाचार आदि अनैतिक कर्मोंके माध्यमसे प्रचुर मात्रामें धनको एकत्रित करके, निर्धनोंको सत्ता करके धनवान तो बन जाते हैं परन्तु अन्तिम समयमें इस संसारसे धनहीन होकरके जाते हैं, हमारा निधन हो जाता है। सारा धन ऐश्वर्य धराका धरा धरामें रह जाता है अतएव कहा गया है कि 'सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानम्' सन्तोष ही सबसे बड़ा धन है। 'जब आवे सन्तोष धन सब धन धूरि समान' लोभको छोड़ दो, पराई सम्पत्तिपर कुदृष्टि न डालो, स्व-उपार्जित और पुरुषार्थ लब्ध धन अपना है, उसका भोग करें, उसीमें सुख है, शान्ति है और मानसिक आनन्द है। लोभ-लालच-पाप एवं विपत्तियोंका कारण है 'लोभ: पापस्य कारणं' तथा इसीको 'लोभमूलानि पापानि' भी कहा गया है। लोभ लालचको छोड़कर सन्तोषपूर्वक जीवन व्यतीत करें, परन्तु इस बातका सदैव ध्यान रखें कि ईश्वर भक्तिमें अध्ययन, अध्यापनमें योग, यज्ञ, ध्यानमें, सेवा-सत्कार, लोकोपकार, राष्ट्रोद्धार, पुरुषार्थ, परमार्थमें अच्छे लोगोंकी संगति आदि शुभ कर्मोंमें यथासामर्थ्य, यथायोग्य, मर्यादित अनुशासित लोभ अवश्य करें। कभी भी ऐसा विचार मनमें नहीं आना चाहिए कि बहुत ईश्वर भक्ति अध्ययन, अध्यापन, योग, यज्ञ, ध्यान, सेवा-सत्कार आदि कर लिया है। अब इन सबमें लालच क्या करना। क्योंकि कहा गया है मा गृध: अर्थात् लालच मत करो तो यह बात उचित नहीं है। प्रतिदिन 'कस्य स्वित् धनम्' का विचार हमारी आंखें खोल देगा और हम लोभसे ऊपर उठेंगे। यह धन किसका है। यह सम्पूर्ण धन निश्चित रूपसे कस्य- (कं सुखमए क: प्रजापति) आनन्दघन, अनिर्वचनीय प्रभुका है। मैं और मेरा तू और तेरा कुछ भी नहीं (मैं-मैं, तू-तूसे बचें), अत: हे मनुष्य! धनका अभिमान मत कर। 'मत कर तू अभिमान रे बन्दे, झूठी तेरी शान रे बन्दे' संसारके प्रत्येक पदार्थोंका त्यागपूर्वक भोग करें।

असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योर्तिगमय मृत्योर्माऽमृतं गमय।

दयालुता

❐ गुरुदेव श्रीश्री रविशंकर

हर व्यक्तिका स्वाभाविक स्वरूप दयालु, प्रेमपूर्ण, करुणामय और आनन्दमय होता है। कोई भी बच्चा बिना किसी कारणके नहीं रोता। वह तभी रोता है जब उसे